Analysis of Cost and Production in Indian Textile Industry (with Special Reference To Rajasthan)

भारत में कपड़ा उधोग का लागत व उत्पादन विश्लेषण (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

A Synopsis/ Research Proposal

Submitted to

Maharshi Dayanand Saraswati University,Ajmer

In Fulfillment for the Award for Degree
Of
DOCTOR OF PHILOSOPHY
In
Economics

Under The Guidance Of :

Dr. J.N. SHARMA
LECTURER (Retd.)
Department Of Economics
Govt. College Tonk

Submitted By :

MANOJ KUMAR

Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan- 305001
Year : 2016

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध पंजीयन हेतु आवेदन पत्र

विभागाध्यक्ष,
शोध विभाग
म.द.स. विश्वविद्यालय,
अजमेर।

प्राचार्य,
....
राजकीय महाविद्यालय - चेंके
राजस्थान

विषयः— शोध पंजीयन हेतु आवेदन।

महोदय / महोदया,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि विश्वविद्यालय के परिपत्र क्रमांकः एफ–15 / शोध / मदसविवि / .... दिनांक .... में वर्णित सूचना के अनुसार मैनें निर्धारित कोर्स वर्क सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है और इस परिपत्र के बिन्दु संख्या–1 में दिये गये निर्देशों के अनुसार शोध पंजीयन हेतु यह आवेदन निम्नांकित वांछनीयता पूरी करते हुए प्रस्तुत कर रहा हूं / रही हूं :–

1. मुझे आवंटित शोध पर्यवेक्षक डॉ. डॉ० एस. शर्मा, B.O.B. Ajmer हैं उन्होंने यह आवेदन पत्र मय दस्तावेज अग्रेषित कर दिया है।
2. आवेदन शुल्क राशि रू.500 / – का डी.डी. नं. 810870662 दिनांक 22-7-16 (कुलसचिव, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के नाम)
3. अध्यादेश 124.10 में निर्धारित परिशिष्ठ–IV के अनुसार Format for outline of Proposed Research Work (6 प्रतियों) में वांछित शोध पर्यवेक्षक के प्रमाण पत्र, (परिशिष्ठ– VI) के साथ संलग्न है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया इस आवेदन पत्र को संलग्न दस्तावेजों के साथ निदेशक शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर को शोध पंजीयन की कार्यवाही हेतु अग्रेषित करावें।

मुझे ज्ञात है कि शोध पंजीयन से शोधोपाधि प्राप्त होने की अवधि में मैं अन्य कोई उपाधि पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं ले सकता / सकती। यदि इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय से कोई डिप्लोमा या सर्टिफिकेट (नियमित / पार्ट टाईम / दूरस्थ शिक्षा) इस अवधि में करना चाहूंगा / चाहूंगी तो वह मैं तब ही करूंगा / करूंगी जब मुझे मेरे शोध पर्यवेक्षक यह प्रमाण पत्र दे देंगे कि इस पाठ्यक्रम को करने से शोध कार्य बाधित नहीं होगा।

संलग्न– उपर्युक्त

प्रार्थी,

दिनांक 22-7-16

हस्ताक्षर ....
पूरा नाम एवं पता Manoj Kumar,
H.N. 2/31 Nasirabad Road,
Alwar gate Ajmer - 305001
टेलीफोन / मोबाईल नं० 9950643494

आवंटित सेवारत शोध पर्यवेक्षक की अग्रेषण टिप्पणी

मैं, डॉ० .... इस विश्वविद्यालय का पंजीकृत शोध पर्यवेक्षक हूं। वर्तमान में .... में कार्यरत हूं। मेरी सेवानिवृत्ति की दिनांक .... है। शोध पंजीयन हेतु उक्त आवेदन पत्र मय संलग्न दस्तावेज निदेशक, शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय को कृपया अग्रेषित कराएं।

दिनांक :

हस्ताक्षर ....
नाम ....
टेलीफोन / मोबाईल नं० ....

आवंटित सेवानिवृत्त शोध पर्यवेक्षक की अग्रेषण टिप्पणी

मैं, डॉ0 जे. एन. शर्मा इस विश्वविद्यालय का पंजीकृत शोध पर्यवेक्षक हूं। मैं दिनांक 31-12-2015 को राजकीय महाविद्यालय, टोंक से सेवानिवृत हो चुका हूं। उक्त अभ्यर्थी को राजकीय महाविद्यालय, टोंक विभाग / महाविद्यालय में शोध करने की अनुमति प्राप्त कर ली है, जो संलग्न है। शोध पंजीयन हेतु उक्त आवेदन पत्र मय संलग्न दस्तावेज निदेशक, शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय को कृपया अग्रेषित कराएं।

दिनांक : 22-07-2016

हस्ताक्षर ....

नाम डॉ. जे. एन. शर्मा

टेलीफोन / मोबाईल नं0 9414378663

क्रमांक: 4319/22-7-16- G.C.Tonk

दिनांक:

निदेशक (शोध)
म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर– 305009

शोधार्थी Manoj Kumar मनोज कुमार का शोध पंजीयन हेतु, आवंटित शोध पर्यवेक्षक से अनुशंषित आवेदन पत्र मय संलग्न उपर्युक्त दस्तावेजों के साथ शोध पंजीयन हेतु अग्रेषित है।

22.7.16

हस्ताक्षर एवं सील, प्राचार्य / विभागाध्यक्ष
प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज.)

शोध अनुभाग के उपयोग हेतु

आवेदन पत्र की जांच कर ली गई है। अतः संबंधित शोध पंजीयन समिति की बैठक में निर्णयार्थ रखे जाने योग्य है

हस्ताक्षर जांच कर्ता

अथवा

आवेदन पत्र की जांच की गई और निम्न कमियां पाई गई जिनकी पूर्ति करायी जानी है :–

1.

2.

3.

आवेदन पत्र में पाई गयी उक्त कमियां अभ्यर्थी द्वारा दिनांक .... को पूरी कर दी गयी है। अतः संबंधित विषय शोध समिति की बैठक में निर्णयार्थ रखे जाने योग्य है।

हस्ताक्षर जांच कर्ता

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER

CERTIFICATE

Course Work Paper-1 : Research Methodology
January 27, 2016 to February 12, 2016

This is to certify that Mr./Ms. ***Manoj Kumar*** *Son/D/o Mr.* ***Chet Ram*** *has attended and completed the teaching/instructions for the course work of Paper-I conducted by the University from 27-01-2016 to 12-02-2016 satisfactorily for the course work of paper-I for registration for the Ph.D Programme.*

(Dr. Surajmal Rao)
Course Co-Coordinator

(Dr. Nawal Kishore Upadhyay)
Course Coordinator

GOVT. COLLEGE TONK RAJASTHAN

CERTIFICATE

Course work Paper-II & Paper-III (Review of Literature and Research Proposal)

This is to certify that Mr. **MANOJ KUMAR** Son of Mr Chet Ram, has qualified/not qualified the Course Work of Paper-II & III for Registration for the Ph.D. programme in the Department of Economics of the Government College Tonk on 03-07-2016 (Date/month/year).

22-07-2016

ignature With date
esearch Supervisor

व्याख्याता 22-07-16
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
Signature With date
Head of The Department

7.16
प्राचार्य
Signature With date
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
Principal टोंक (राज.)
Govt. College Tonk

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/~~Km~~./Smt. ....manoj Kumar.... on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ....03................ (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....3.......................... (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

22-07-2016

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/~~Km~~./Smt. Manoj Kumar Suryavanshi for research work if he/she is registered for Ph.D.

22.7.16
प्राचार्य

Signature of the Principal/
Director of the Institution with date

22.07.16
व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

Signature of the Head,
Department with date

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work (to be supplied in Six copies)

1. Name of Scholar (In English) : MANOJ KUMAR

   (In Hindi) : मनोज कुमार

2. Title of the Research Work (In English) : **Analysis of Cost and production In Indian Textile Industries (With Special reference to Rajasthan)**

   (In Hindi) : **भारत में कपड़ा उधोग का लागत व उत्पादन विश्लेषण (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)**

3. **Location** a. Institution/Department where the work is to be done b. Geographical area of **Investigation**, if any.
4. **Introduction** Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. **Review** (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. **Research Gaps** identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. **Major Hypothesis**, if any.
8. **Research** Methodology.
9. **List of References** cited.

Dr. J. N. Sharma, 22-07-2016
Lecturer (Retd.)
Outline Approved.
Name and Signature of supervisor with date & seal

Manoj Kumar
(Research Scholar)

शोध का परिचय (Research Introduction)

प्रस्तावना :– भारतीय अर्थव्यवस्था मे कपड़ा उधोग का महत्वपूर्ण स्थान है। कपड़ा उधोग भारत का सबसे बडा संगठित उपभोक्ता उधोग है। सूत एवं वस्त्र के उत्पादन में भारत का विश्व में तीसरा स्थान और और कपास के उत्पादन में दूसरा स्थान है। देश के कुल औधोगिक उत्पादन में कपड़ा उधोग 20 प्रतिशत का योगदान करता है। इस क्षेत्र में लगभग 3.5 करोड लोगो को रोजगार प्राप्त हो रहा है। कृषि क्षेत्र का मिलाकर यह क्षेत्र लगभग 9 करोड का रोजगार उपलब्ध कराता है। यह देश का सकल घरेलु उत्पाद में 4 प्रतिशत योगदान देता है तथा देश की सकल निर्यात आय में इसका योगदान 12.5 प्रतिशत है। यही एक मात्र उघोग है जो कच्चे माल से लेकर सवोच्च मूल्य सम्बन्धित उत्पाद जैसे सिले सिलाये वस्त्र आदि तक पूरी तरह आत्म निर्भर है। भारत में 1818 में कलकत्ता के पास घुसरी नामक स्थान पर पहली कपड़ा मिल लगाई गई। 1854 में मुम्बई में कपड़ा मिले स्थापित हुई और 1867 में अहमदाबाद में सूती कपड़ा मिले स्थापित की गई।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारत में 398 कपड़ा मिले थी जिसमें से 14 पाकिस्तान में चली गई। इस समय भारत मे सूती मिलों मे स्थापित कुल तकुओं की संख्या 1,034500 तथा करधों की संख्या 2,03000 है। सूत का उत्पादन 60 करोड कि.ग्रा. एवं कपडे का उत्पादन 351 करोड मीटर था।

देश में अधिकतर सूती वस्त्र कपड़ा मिलें महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडू, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, प.बंगाल व आन्द्रप्रदेश में है। जब कि राजस्थान मे भीलवाडा, अजमेर, बाडमेर (सांचौर), पाली, जयपुर, झालावाड, कोटा, सावाईमाधोपुर, आदि जिलों में केन्द्रित है।

सरकार ने अप्रेल 1968 मे राष्ट्रीय वस्त्र निगम की स्थापना करके तात्कालिक 16 बीमार सूती मिलों का प्रबन्ध इस निगम को सौपा गया। भारतीय कपड़ा उधोग भारत के विविध भागों को जोडने का कार्य करता है। यहां कपड़ा अधोग के अन्तर्गत कपास, जूट, रेशम, पालिस्टर, विस्कोस, नॉयलॉन, एक्रिलिस की तरह कृत्रिम रेशों के यार्न, मानव निर्मित फाइबर, पॉलिस्टर फाइबर, इस उधोग को मजबूती प्रदान करते है।

इस उधोग मे संचालित मुल्य श्रृंखला पर आधारित उत्पादन में नियंत्रण बडे निर्माताओं का है। जब कि छोटे व्यापारियों का नियंत्रण खुदरा व्यापार और डिजाइन व्यापार की श्रृंखला पर है।

कपड़ा उधोग मे विकसित देशों की संरक्षण वाद की व्यापक नीति के कारण विकासशील देशों और तीसरी दुनिया के देशों के उत्पादकों एवं निर्यातको को एक अदवितीय विविधता के लिए प्रेरित किया है।

संचालित मूल्य श्रृंखला की गतिशीलता की जांच के लिए कपड़ा उधोग एक आदर्श उधोग है। आज कपड़ा उधोग आर्थिक गतिविधियों के दायरे में अन्तर्राष्ट्रीय और वैश्विक पूंजिवाद मे अग्रणी है। वैश्वीकरण, राष्ट्रीय सीमा के पार आर्थिक गतिविधियों के भौगौलिक विस्तार को दर्शाता है,वैश्वीकरण अन्तराष्ट्रीय स्तर पर गतिविधियों का कार्यात्मक एकीकरण है। वैश्वीकरण को औधोगीकरण व वाणिज्य कम्पनियां दोनों ने बढावा दिया है। अन्तराष्ट्रीय आर्थिक नेटवर्क के अन्तर्गत दो प्रकार के उधोग संचालित है। एक निर्माता संचालित उधोग और दूसरा केता संचालित उधोग है।

निर्माता संचालित मूल्य श्रृंखला के उत्पादन में अन्तराष्ट्रीय निर्माताओं की केन्द्रिय भूमिका होती है जबकि केता संचालित मूल्य श्रृंखला आधारित उधोग में बडे खुदरा विकताओं बाजार और ब्रांडेड निर्माताओं निर्यातक देशों, विकासशील देशों में स्थित नेटवर्क विकेन्द्रीकृत उत्पाद सीपित करने की भूमिका निभा रहे है।

निर्माता संचालित उधोग में फर्मों का नेतृत्व आम तौर पर अन्तराष्ट्रीय अल्पाधिकार के अन्तर्गत होता है, इसके विपरीत केता संचालित मूल्य श्रृंखला कम प्रवेश बाधाओं के साथ अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और वैश्विक स्तर पर विकेन्द्रीकृत उधोग की विशेषता है। इस प्रकार निर्माता संचालित मूल्य श्रृंखला उत्पादन के आधार पर बडे निर्माताओं के नियंत्रण में है, जबकि केता संचालित मूल्य श्रंखला में व्यापारियों को मुख्य लाभ उठाने के लिये परिश्रम करना पडता है।

केता संचालित मूल्य श्रंखला कपड़ा उधोग के लिये एक आदर्श श्रृंखला है। केता संचालित मूल्य श्रृंखला की गतिशीलता की जांच कपड़ा उधोग द्वारा की जाती है, क्यों कि इस श्रेत्र में विकसित देशों की संरक्षणवाद की व्यापक नीतियों के साथ मिलकर विकासशील देशों के कपड़ा उधोग एवं परिधान निर्यातकों को उच्च व्यापार के लिये प्रेरित किया है। कपड़ा उधोग के साथ जुडे व्यापारियों तथा श्रमिकों की बडी संख्या ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सम्बन्ध बनाने में मदद की है।

केता मूल्य श्रृंखला के अन्तर्गत कपड़ा उधोग पांच मुख्य भागों को आयोजन करता है :–

(1) कच्चे माल की आपूर्ति :– प्राकृतिक और सिंथेटिक फाइबर यार्न और कच्चा माल

(2) कपड़ा कम्पनियों द्वारा निर्मित घटकों के प्रावधान

(3) उत्पादन कपड़ा कारखानों तथा उनके घरेलू और विदेशी सह–निविदाकार्ताओं से बना नेटवर्क

(4) निर्यात व्यापार बिचौलियों द्वारा स्थापित चैनल

(5) खुदरा स्तर पर विपणन नेटवर्क

भारत में कपड़ा और परिधान उधोग देश के सबसे पुराने विनिर्माण उधोग में से एक है और वर्तमान में सबसे बडा उधोग है। कपड़ा उधोग भरतीय अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका अदा करने वाला तथा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला सबसे बडा नियोक्ता है। कपड़ा उधोग में आर्थिक गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। इसमें कपास, जूट, उन, रेशम के रूप में प्राकृतिक कच्चे माल के साथ कृत्रिम रेशा और सूत कातना शामिल है। इसके अलावा भारतीय कपड़ा उधोग तैयार उत्पाद की भी एक विस्तृत श्रृंखला बना हुआ है एवं चीन के बाद दूसरा उत्पाद करने वाला देश है।

भारत वैश्विक उत्पादन क्षमता का 8 प्रतिशत के आस–पास कपड़ा व परिधान उत्पादन करता है। भारतीय कपड़ा उधोग दुनिया के उत्पादन का 24 प्रतिशत उत्पादन क्षमता वाला देश है, भारत कपड़ा फाइबर यार्न दुनिया के उत्पादन का 14 प्रतिशत उत्पाद करने वाला देश है। भारत कपड़ा, फाइबर, यार्न, रेशम, सेल्पूलोज फाइबर, यार्न सिंथेटिक, फाइबर विलिचिंग उधोग के उत्पादन मे पांच सबसे बडे उत्पादक देशों में से दुसरे नम्बर का सबसे बडा उत्पादक देश है।

दुनिया के सबसे बडे करधा उधोग के साथ सम्पन्न भारतीय कपड़ा उधोग सर्वोच्च उधोग है। एक मजबूत मल्टी फाइबर कच्चे माल का आधार, कुशल श्रमिकों की एक विशाल

संख्या, लचीली उत्पादन प्रणाली, जीवंत रचनात्मक डिजायन व गतिशील उधमशीलता के लिये कपड़ा उधोग एक आधारभूत उधोग है। भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख आय का भी मुख्य आधार रहा है। भरतीय अर्थव्यवस्था में कपड़ा उधोग एक विशाल ईकाई है, जिसमें कपड़ा उधोग के विकास का अधार संगठित क्षेत्र, विकेन्द्रीकृत क्षेत्र, बुनकरों, कारीगरों के साथ–साथ यहां के किसान भी है।

आज भारत का कपड़ा उधोग हस्त निर्मित से अर्ध–यांत्रिक, यांत्रिक और अत्यधिक जानकारी आधारित प्रौधोगिकी और माइक्रो प्रोसेसर आधारित प्रोधोगिकी में फैल गया है। कपड़ा उधोग के मजबूत उत्पादन का आधार फाइबर की विस्तृत श्रृंखला है जिसमे, कपास, जूट, रेशम, पोलिस्टर, विस्कॉम, नायलॉन, एक्रिलिक तरह की कृत्रिम फाइबर, मानव निर्मित फाइबर, प्राकृतिक रेशो के यार्न आदि है।

भारतीय कपड़ा उधोग, भारतीय संस्कृति की जटिल और विविध सम्पना के साथ मिलकर मल्टी फाइबर कच्चे माल के आधार पर यहां के उपभोक्ताओं की जरूरतों और वरीयताओं के लिये विविध उत्पाद का उत्पादन करने में सक्षम रहा है, भारत दुनिया मे जूट का सबसे बडा उत्पादक, रेशम का दूसरा सबसे बडा उत्पादक, कपास का तीसरा सबसे बडा उत्पादक है। सेल्यूलोसिक फाइबर में दुसरा सबसे बडा उत्पादक तथा सिंथेटिक फाइबर यार्न में सबसे बडा उत्पादक देश है।

पिछले दशकों की तुलना में भारत कपड़ा उधोग विकास के पेर्टन में पिछले एक दशक में काफी आगे रहा है। भारत के राजकोषीय शुल्क बढाने में भी भारतीय कपड़ा उधोग काफी हद तक औधोगिक संरचना को प्रमाणित करने में सक्षम रहा है।

उद्योग की वर्तमान स्थिति :–

1. **मिलों की संख्या एवं उत्पादन** :– भारत में इस समय मिलों की संख्या 1894 है, जिसमे 1711 कताई मिले तथा शेष 183 कताई–बुनाई मिले है। इन मिलों में 385.1 लाख तकुए एवं 5,18,000 रोटर्स तथा 5,700 करधे स्थापित है। इनमें 777 मिले निजी क्षेत्रों में 179 सार्वजनिक क्षेत्र में तथा 98 मिले सहकारी क्षेत्र है। उधोग मिल क्षेत्रों में 12 लाख

पावरलूम, 50 लाख हैण्डलूम क्षेत्र है एवम् एक करोड 8 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्रदान कर रहा है। पावरलूमों की 11 लाख तथा हैण्डलूमों की संख्या 80 लाख से अधिक हो गयी है।

2. **वस्त्रों का उत्पादन** :– इस समय वस्त्रों का उत्पादन 6,25402 करोड वर्ग मीटर है, जिसमें से 220.5 करोड वर्ग मीटर मील क्षेत्रों द्वारा, 4,487.8 करोड वर्ग मीटर हैण्डलूम एवं पावरलूम क्षेत्र के द्वारा उत्पादित किया जाता है। मिले तीन प्रकार की है – कताई मिले, बुनाई मिले, तथा मिली जुली कताई–बुनाई मिले, प्रतिवर्ष मिल क्षेत्र में 203 करोड किलोग्राम सूत का उत्पादन किया जाता है। इसके अतिरिक्त लगभग 190 करोड किलोग्राम विभिन्न प्रकार के कृत्रिम रेशों का उत्पादन होता है।
3. **निर्यात** :– भारत मिलों द्वारा उत्पादित एवं हथकरधा द्वारा उत्पादित दोनों प्रकार के वस्त्रों को निर्यात करता है। देश में वर्ष 2010–11 में 26.82 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य के बराबर कपडे का निर्यात हुआ था।
4. **राष्ट्रीय वस्त्र निगम** :– यह निगम राजकीय या सार्वजनिक क्षेत्रो में वस्त्र उत्पादन का सबसे बडा संगठन बन चुका है। 1974 में 103 बीमार सूती वस्त्र मिलों का राष्ट्रीकरण करके उनका स्वामित्व इस निगम को सौपा गया था, अब इसके अन्तर्गत 122 मिले है, जिनमें 107 राष्ट्रीयकृत तथा 15 प्रबन्धित मिले है। अब यह निगम वस्त्र उधोग मे स्थापित कुल तकुओं ःवपदकसमेद्ध के 16 प्रतिशत तथा करधों (स्वव्उ) के 23 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करता है। निगम की चुकता पूंजी 262 करोड रूपये है तथा इसके द्वारा लगभग 95 करोड मीटर कपडे का उत्पादन किया जाता है। इसके अधीन 9 सहायक निगम है जिनके मुख्यालय दिल्ली, कानपुर, इन्दौर, मुम्बई, अहमदाबाद, कोलकाता, बैंगलूरु एवं कोयम्बटूर में है।
5. **सूती वस्त्र मशीनरी** का उत्पादन :– भारत में लगभग 600 रजिस्टर्ड फर्में टेक्सटाईल मशीनरी का उत्पादन कर रही है। प्रतिवर्ष 2,451.2 करोड रूपये की टेक्सटाईल मशीनों, यन्त्रों एवं पुर्जो कर उत्पादन किया जाता है।
6. **तकनीकी समुन्नयन** :– भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण परिवेश में कपड़ा उधोग में इसकी रोजगार क्षमताओं एवं तकनीकी उन्नयनों की जरूरतों के मध्य इस उधोग की

प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में सुधार लाने तथा दीर्घकाल में व्यवहारिक रूप से सक्षम बनाने के लिये कपड़ा उधोग को समुचित ब्याज दर, समय पर और पर्याप्त मात्रा में पूंजी उपलब्ध हो, इस समस्या के समाधान के लिये 1 अप्रेल 1919 को तकनीकी विकास निधी योजना की शुरूआत की गई। जिसमे 1,16981 करोड रूपये की परियोजना लागत वाले 16911 आवेदन स्वीकृत हो चुके है।

राष्ट्रीय टेक्सटाईल नीति 2002 :– इस नीति की घोषणा 2 नवम्बर 2000 का की गई। भारतीय टेक्सटाईल उधोग के निर्यात के लिये, विकासोन्मुख बनाने के लिये तथा मात्रात्मक प्रतिबन्धों एवं समझौतो के सन्दर्भ में इस नीती का महत्व है :–

- इसका उद्देश्य वस्त्रों के निर्यात का लक्ष्य वर्तमान 13.16 बिलियन डॉलर से बडा कर 50 बिलियन डॉलर करना, जिसमें रेडिमेड गारमेन्ट का भाग 25 बिलियन डॉलर होगा।
- टेक्सटाईल अपग्रेडेशन फन्ड स्कीम (TUFS) को समयबद्ध रीति द्वारा उधोग के समस्त प्रभागों पर लागु करना।
- कपास की उत्पादकता मे 50 प्रतिशत की वृद्धि करना तथा इसकी किस्म मे सुधार करना।
- उधोग की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये निजि क्षेत्रों को प्रेरित करना और उसकी सहायता करना।
- उधोग मे कार्यरत साहसियों के लिये एक वैंचर पूंजी कोष (Verture Capital Fund) की स्थापाना करना।
- विश्व स्तर के पर्यावरण परक एकीकृत टेक्सटाईल कॉम्पलेक्स की स्थापना में निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन एवं सहयोग देना।
- हैण्डलूम उधोग को मूल्यवर्धित माल (Value Added Items) के उत्पादन के लिये प्रेरित करना तथा विशाल संयुक्त प्रावधानों को विश्व बाजार में प्रवेश के लिये प्रोत्साहित करना।

➢ हैण्डलूम, रेशम, हस्तशिल्प एवं जूट उधोग में पंचवर्षिय योजनाओं के निर्धारित कार्यकर्मों में समुचित सुधार करना।

➢ मानव संसाधन विकास, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी आदि संस्थाओं का उत्पादों में नवीनता लाने के लिये उत्साहित करना।

➢ टेक्सटाईल रिसर्च संस्थानों को उधोग की आवश्यकता के अनुसार अनुसंधान के स्तर में नया मोड देने की प्रेरणा देना।

➢ वस्त्र मंत्रालय के अधीन आने वाले फील्ड संगठनों को उधोग के विकास एवं नवीनीकरण के लिये प्रेरित करना।

भारत में वस्त्र निर्यातों को प्रोत्साहन देने के लिये, निर्यात हेतु परिधान पार्क नामक एक केन्द्रिय प्रायोजित योजना शुरू की गई है जिसका लक्ष्य सम्भावित विकास केन्द्रों में अन्तराष्ट्रीय स्तर पर परिधानों का उत्पादन करने वाली ईकाईयों की स्थापना करना है। इससे परिधानों के निर्यात को प्रोत्साहन मिलेगा। ऐसे पार्क स्थापित किये जायेगे जो बैंगलुरू, लुधियाना, कांचीपुरम, सूरत, तिरूवन्नतपुरम, कानपुर और विशाखपट्टनम में होंगे।

तालिका : भारत के वस्त्र उत्पादन (करोड वर्ग मीटर)

क्षेत्र	2005–06	2006–07	2007–08	2008–09	2010–11
मिल क्षेत्र	165.6	174.6	178.1	179.6	220.5
हथकरधा	610.8	653.6	694.7	667.7	694.9
बिजलीकरधा	3062.6	3287.9	3473.6	3364.8	3792.9
होजरी	1041.8	1150.4	1180.4	1207.7	1464.7
अन्य	76.9	72.4	76.8	76.8	81.2
योग	**4957.7**	**5338.9**	**5603.6**	**5496.6**	6254.2

राजस्थान में कपड़ा उधोग की स्थिति :– राजस्थान कपड़ा उधोग क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण राज्य है। राजस्थान का कुल क्षेत्रफल लगभग 3.42 लाख वर्ग कि.मी.है, जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.4 प्रतिशत है। राजस्थान, योजनाबद्ध विकास के 60 वर्ष बावजूद भी औधोगिक दृष्टि से अन्य राज्यों के मुकाबले काफी पिछडा है। राजस्थान में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 1951 में केवल सात कपड़ा मिले थी। उनमें कपडे का उत्पादन 301 लाख मीटर था। कपडे की बढती मांग के कारण राजस्थान में कपड़ा उधोग का तेजी से विकास हुआ और 1984–85 में यहां मिलों संख्या 24 हो गयी। सिंथेटिक कपडे का उत्पादन 475.4 लाख मीटर है।

सूती वस्त्र उधोग राज्य का सबसे प्राचीन एवं संगठित उधोग है। राज्य में प्रथम सूती वस्त्र मिल निजि क्षेत्र की कृष्णा मिल्स लि. 1889 में दामोदर दास राठी एवं श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा ब्यावर (अजमेर) में स्थापित की गयी जो अब राज्य सरकार के अधीन है। इसके बाद दूसरी सूती वस्त्र मिल एडवर्ड मिल (1906) ब्यावर (अजमेर) में स्थापित की गयी थी। राज्य में निजि क्षेत्र की प्रमुख सूती मिलें महालक्ष्मी (ब्यावर), मेवाड टेक्सटाईल (भीलवाडा), महाराजा उम्मेद मिल्स (पाली), सार्दुल टेक्सटाइल मिल (श्रीगंगानगर) है। राज्य में सार्वजनिक क्षेत्र में ब्यावर व विजय नगर में मिले स्थामित की गई है। 13 अप्रेल 1993 को तीनों सहकारी क्षेत्रों की मिलों को मिलाकर स्पिनफैड बना दिया गया है। वर्तमान समय में भीलवाडा को सूती वस्त्र उधोग की अधिकता के कारण राजस्थान का मेनचेस्टर कहां जाता है। कपडे से सम्बन्धित उधोग जोधपुर, पाली, अजमेर, कोटा, चितौडगढ़, बीकानेर, श्रीगंगानगर, बाडमेर (सांचौर), जयपुर आदि स्थानों पर है।

महत्व (Importance)

भारतीय अर्थव्यवस्था में कपड़ा उधोग का इतिहास बहुत लम्बा रहा है। देश की अर्थव्यवस्था में कपड़ा उधोग के योगदान के विवरणों के बारे में सम्पूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि विधमान है। एक अर्थव्यवस्था में आय, अत्पाद, रोजगार, पूंजी निर्माण, विपणन, निर्यात, आर्थिक विकास, संरचनात्मक ढांचे आदि दिशाओं में कपड़ा अधोग का महत्वपूर्ण स्थान होता है। साथ ही कपड़ा उधोग स्थानीय बाजारों के जरिये घरेलू मांग प्रबन्ध में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर, राष्ट्र निर्माण में अपना प्रमुख योगदान देता है। अतः प्रस्तावित अध्ययन में निम्न प्रश्नों के उत्तर खोजने की कोशिश की गई है।

- कपड़ा उधोग का राष्ट्रीय आय में क्या योगदान है। कपड़ा एवं परिधान उधोग में रोजगार सम्वर्धन तथा पूंजी निर्माण में क्या भूमिका है, निर्यात सम्वर्धन तथा पूंजी निर्माण में क्या भूमिका है, नई तकनीकी, निर्यात सम्वर्धन और घरेलू मांग में कपड़ा उधोग की क्या भूमिका है।
- प्रस्तावित अध्ययन इन सब समस्याओं के समाधान को उचित दिशा प्ररतुत करने में सहायक होगा।
- इस अध्ययन में लागत–विश्लेषण के अन्तर्गत विभिन्न निर्धारकों की उत्पादन लागत में भूमिका का अध्ययन किया जाना है ताकि कपड़ा उधोग के लागत प्रबन्ध में कुशलता के ऊंचे स्तर प्राप्त किये जा सके और पैमाने की मितव्यवताओं का लाभ उठाया जा सके। इस सन्दर्भ में इस अध्ययन की भूमिका महत्वपूर्ण है।
- उत्पादन विश्लेषण इस तथ्य पर प्रकाश डालेगा कि कपड़ा उधोग के विभिन्न निर्धारक क्या है और उनकी भूमिका कैसी है। यह कपड़ा उधोग के बुनयादी कच्चे माल से शुरू होकर उपभोकता को मिलने वाले उत्पाद की सागग्री तक के कई चरणों की भूमिका का मूल्यांकन करने में सहायक होगा।
- यह उधोग नीति निर्माताओं व आयोजको के लिए महत्वपूर्ण दिशा निर्देश प्रस्तुत करेगा ताकि वे भावी योजनाओं, नीतियों, व कार्य कियाओं की भूमिका में अधिक प्रासंगिकता

ला सके। साथ ही जब प्रोधौगिकी व उन्नत प्रबन्ध सामाजिक – आर्थिक अवस्था के मूल्यांकन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

अन्ततः यह अध्ययन कपड़ा उधोग और उससे सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का मापन कर भावी शोधार्थियों का उचित व पर्याप्त मार्ग दर्शन कर सकेगा।

उद्धेश्य (Objective)

प्रस्तावित कपड़ा उधोग के अध्ययन के प्रमुख उद्धेश्य निम्न प्रकार है।

(1) राजस्थान मे कपड़ा उधोग के आय, रोजगार, उत्पादन, संरचनात्मक ढांचा, घरेलू मांग, पूंजीनिर्माण व निर्यात की भूमिका का अध्ययन करना।

(2) राजस्थान में कपड़ा उधोग की समृद्धि के अध्ययन हेतु सम्बन्धित सम्वृद्धि समीकरणों का आंकलन करना साथ ही क्षमता व प्रभावशीलता का आंकलन करना।

(3) कपड़ा उधोग में लागत सम्पन्ता का अध्ययन करना तथा लागत फलन के आंकलन द्वारा विभिन्न लागत निर्धारकों का विश्लेषण कर साथ ही इससे सम्बन्धित अनुसंधानों का मूल्यांकन करना।

(4) कपड़ा उधोग में उत्पादन व उत्पादकता का विश्लेषण करना तथा उत्पादन फलन के आंकलन द्वारा विभिन्न आयामों की भूमिका का मूल्यांकन करना।

(5) कपड़ा उधोग के विकास हेतु एक उचित नीति, आयोजन, अनुसंधान व नये आयामों का सुझाव देना।

साहित्य का पुनर्रावलोकन (Review Of Literature)

किसी भी अध्ययन के पुनः अध्यापन एवं परिभाषा का महत्वपूर्ण कार्य साहित्य पुनर्वालोकन अदा करता है। पुर्नावलोकन किसी भी विषय का अनुसरण कर उस अध्ययन से सम्बन्धित स्थापना एवं अस्तितव को जानने में मदद करता है साथ ही अध्ययन से सम्बन्धित क्षेत्रों को खोजकर अर्थपूर्ण निष्कर्ष के लिए वर्तमान स्थित की जानकारी देता है।

कपड़ा उधोग की समृद्धि, लागत, उत्पादन स्थिति से सम्बन्धित कुछ तथ्य, आंकडे, लेख, कथन, जनरल, रिपोर्ट एवं साहित्यो से सम्बन्धित विवरण इस अध्ययन में प्रस्तावित किए जा रहे है जो निम्न प्रकार से है :–

गोस्वामी ओमकार (1985) – लागत कटौती एवं नई तकनीक के उपायों द्वारा कपड़ा उधोग में तुलनात्मक लोगों को फायदा उठाने के लिए प्रोत्साहित किया है। अर्थवयवस्था में उधोग की हिस्सेदारी बढाने तथा वैश्विक बाजार में बुनियादी रूप में मजबूत बनाने के लिए सरकारों को विकास योजनाए बनाने के लिए बाध्य किया है जिसमें इस उधोग को अधिक समृद्ध एवं विकसित बनाया जा सके।

आबिद हुसैन कमेटी (1990) – कपड़ा उधोग से सम्बन्धित क्षेत्रों एवं बुनकरों की मदद के लिए इस कमेटी में सरकारों को इनसे सम्बन्धित संघों को खोलने व मदद करने का प्रस्ताव दिया है। जिसमें इस उधोग का वास्तविक विकास हो सकें। ऐपेक्स विकारा एवं काटन तकनीकी संघ, ऐपेक्स वस्त्र पुनसंरचनात्मक ऐजेन्सी, हैण्डलूम क्षेत्रानुसार सर्म्वधन ऐजेन्सी, वस्त्र पुनः नियत योग्य ट्रस्ट (TRATS) राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण, पावरलूम क्षेत्र विकास निगम आदि के द्वारा कपड़ा उधोग यार्न, पावरलूम, करधा उधोग का विकास कर इनसे जुडे मजदूरों के भी जीवन का उत्थान किया जा सकता है।

काठिया पी. (1991) – हथकरधा उधोगों की प्रत्यक्ष समस्याओं एवं उनके कारणों की चर्चा इस में की गई है। साथ ही हथकरधा उधोंगों की उत्पादक एवं क्षमताओं को किस प्रकार से बढाया जाये जिससे करधों उधोगों का विकास हो सकें। इस लेख गें सुझाव दिये गये है कि हथकरधा कपड़ा बुनकरों के उत्पादो को किस प्रकार सुरक्षित करके उनके उधोगों

को बढावा दिया जा सके। इनकें उत्पादों को बाजार तक पहुचाने की व्यवस्था एवं उन्हे उचित दर पर बेचने की व्यवस्था की जाए, जिससे यह बिचौंलियों से बच सके। बुनकरों के उत्पादन के लिए रियायति दरों पर ऋण एवं आर्थिक सहयोंग के लिए योजना लागू की जाए ताकि निचले स्तर पर यह उत्पाद आगे बढ सके।

भारत में कपड़ा उधोग को लागत कटौती के साथ विकसित करने पर जोर दिया गया है क्योंकि भारत एक श्रम प्रधान देश है। यदि लागत चरों की कीमत कम और मजदूरी ज्यादा हो तो यहां के मजदूरों का सामाजिक व आर्थिक विकास हो सकेगा। इस उधोग को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार कि नीतियों बनानी होगी एवं संस्थाए स्थापित करनी होगी, जिससे इन उधोगो का ढांचागत विकास हो सके। ATTRA, BIRA, NITRA, SITRA – (1991)

चटर्जी एवं आर मोहन आर (1993) – भारतीय परिधान निर्यात भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखता है इसलिए इस व्यापार में गैर–बांधा व्यापार की व्यवस्था नीति को लागू करना चाहिए। भारत के कुल परिधान निर्यात में बैंगलोर, मुम्बई, नई दिल्ली और तिरूपुर की हिस्सेदारी 45.67 प्रतिशत है। अतः देश के सभी राज्यों को इस उधोग में बढावा मिलना चाहिए, जिससे सभी क्षेत्रों का समुचित विकास हो सके।

अखिल भारतीय हथकरधा सम्मेलन, नई दिल्ली (1993) – भारतीय हथकरधा उधोग को बहुत समस्याओं को सामना करना पडता है, इसे सम्मेलन द्वारा सरकार को यह सुझाव दिये गये है कि हथकरधा उधोग को रियायती दरों पर यार्न एवं कच्चा माल उपलब्ध कराया जाये एवं इनके उत्पादों को उचित दरों पर बिकी की व्यवस्था की जाये क्योंकि यह उत्पाद बडी मिलों के लिए कच्चा माल होते है। हथकरधा उधोग को बढावा देने के लिए पावरलूमों की मात्रा सीमित की जाए एवं हथकरधा उधोग को बढावा देने के लिए अतिरिक्त स्पिनिंग मिलों की स्थापना की जाए।

एक्जिम बैंक ऑफ इण्डिया 1995 – विश्व अर्थव्यवस्था की व्यापक सीमा के अन्दर कपड़ा उधोग का आवश्यक विकास इसके निर्यात की गतिशीलता पर निर्भर है। सरकार द्वारा इस

उधोग के विकास के लिए कोटा युक्त निर्यात निर्धारित किया जाए क्योंकि भारत में अधिक कपड़ा मिले श्रम प्रधान है। इससे यहां के श्रमिको का विकास हो सकेगा। भारत चीन व अमेरिका के बाद कपास का तीसरा सबसे बडा उत्पादक देश है। इस दृष्टि को ध्यान में रखते हुए सरकार को इस उधोग के वास्तविक विकास की नीति निर्धारित करनी चाहिए।

सुन्दर सिंह (1997) – भारतीय वस्त्र हैण्डलूम उधोग का अनुभाविक अध्ययन करके इसके विकास एवं समृद्धि के प्रयत्न किय गये है। यह उधोग वस्त्र संगठनों के द्वारा दो क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। हैण्डलूम उधोग निगम क्षेत्र व अनिगम क्षेत्रों में फैला हुआ है। इन दोनों क्षेत्रों का विकास करके हैण्डलूम उधोग को बढावा दिया जा सकता है और इससे जुडे भारतीय मजदूर वर्गो का जीवन उच्च बनाया जा सकता है।

रामा स्वामी के.वी. और जी. गैरेफी (1998) – वैश्विक बाजार में कपड़ा उधोग को विकसित आकार देने के लिऐ इस उधोग को नई तकनीक के साथ विकसित करना होगा। विज्ञापनों एवं उच्च सहायता से क्रय शक्ति को बढावा देना होगा। उच्च लाभ को दिशा देने के लिए उधोग को सकारात्मक दिशा देनी जरूरी है। भारतीय निर्यात को बढावा देने के लिए एवं भारतीय संस्कृति को आगे बढाने के लिए यहां के अलग–अलग राज्यों के कुटीर एवं हैण्डलूम उधोग आधारभूत योगदान दे रहे है। जिससे यहां के पिछडे राज्यों का वास्तविक विकास भी हो सके।

चन्द्र पंकज (1999) – कपड़ा उधोग की लधु एवं मध्यम वर्ग की ईकाईयों में उच्च तकनीक के साथ विकारा की व्यूह रचना जरूरी है। कच्चामाल, फाईबर यार्न, सिंथेटिक फाईबर के मालों की पूर्ति इन ईकाईयों को सही समय पर होना जरूरी है, जिससे इन उधोगों को भी अग्रिम उधोगों में खडा किया जा सके।

समर वर्मा (2002) – कपास उत्पादन में विश्व में भारत का तृतीय स्थान है। कपास की खेती में भारत का प्रथम स्थान है। सूती एवं कपास कातने में, बुननें में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है। विश्व में भारत में सबसे कम कीमत में यार्न एवं फाइबर का उत्पादन एवं व्यापार होता है, क्योंकि भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृति, हथकरधा, हैण्डलूम,

पावरलूम, बचे हूए वस्त्र एवं परमपरागत वस्त्रों के उत्पादन से जूडी हुई है। उस उधोग यहां की आर्थिक सामाजिक स्थितियों को अपने समाहित किए हुए है।

एपेरियल व्यूह रिपोर्ट 2003 – राष्ट्रीय फैशन प्रोधौगिकी संस्थान व अन्य संघों ने भारतीय परिधान उधोग के नये आयाम प्रस्तुत किये है। भारतीय परिधान रेडिमेड उधोग व्यापार में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखता है। भारत में बडे–बडे रेडिमेड परिधान विनिर्माण समूह है। परिधान उधोग ने नीति निर्माता और व्यापारियों का ध्यान आकर्षित किया है। भारत में परिधान निवेश बहुत बडा है तथा यहां पर परिधान उधोग पार्क स्थापित किये गये है।

शुभराज और जोसफ मेल्मन 2004 – केन्द्र संघों व राज्य बुनकर संघों ने कपड़ा उत्पादन की विभिन्न व्यूह रचना को अपनाया है। इस उधोग को बढावा देने के लिए संघों द्वारा व्यापारिक वातावरण की नीति को अपनाया गया है। कपड़ा उधोग के सभी संघों को जवाबदेही व्यापार के लिए सेल्फ गर्वनेन्स नीति अपनानी चाहिए जिससे इस विस्तृत फैले उधोग को इन तकनीकों द्वारा और विश्व स्तर पर बढाया जा सके।

मैरियन लैजामा, बर्लन वैबर एवं चैरिस डैगन (2005) – वैश्विक कपड़ा उधोग गें नव परिवर्तन अन्तराष्ट्रीय व्यापार व्यवस्थाओं के कारण हो रहा है। प्रतिस्पर्धा उत्पादन एवं प्रतिस्पर्धी कीमतों के कारण इस उधोग के व्यापार में नई खोज हुई है। सरकारों द्वारा इस उधोग को संरक्षणवादी नीतियों के कारण भी नई तकनीकी के साथ जुडकर नये आयामों को प्रस्तुत करने का मौका मिला है। कोटा युक्त व्यवस्था एवं उच्च गुणवत्ता ने भारतीय कपड़ा उधोग को विश्व गें अग्रणी रथान में पहुंचा दिया है।

सुनील कुमार और नीतू बैला (2007) – भारतीय कपडा उधोग की लघु एवं मध्यम वर्ग की ईकाईयों का नई तकनीको एवं कम्प्यूटराइज तकनीकों के साथ जुडने पर बहुत विकास हुआ है। प्रतिस्पर्धा लाभ प्राप्त करने के लिए कम्पनियों की पुर्नरचना की जा रही है। निर्यात व घरेलु बाजार में इन क्षेत्रों की उपलब्धता का नया आयाम शुरू हुआ है।

कैल्विन और जौसफ (2007) – परिधान उधोग की ईकाईयों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ इसमें रोजगार की सम्भावनाएं तो बढी है, परन्तु उच्च तकनीकी परिवर्तन होने

से भारत में इन उधोगों में अभी भी दुर्घटनाओं की सम्भावना भी बनी हुई है। रेडिमेड वस्त्रों एवं परिधान उधोगों की प्रतिस्पर्धी उत्पादन व्यवस्था ने इन उधोगों की जवाबदेही पर दोष प्रकट किये है, फिर भी नई प्रौधोगिकी से वस्त्र उधोगों में होने वाली दुर्घटनाओं को कम करके अत्यधिक उत्पादन किया जा सकता है।

आदित्य भारवाह 2008 – वस्त्र उधोग के बडे हिस्से पर पूंजीपतियों एवं बडी कम्पनियों की हिस्सेदारी है जिससे यह उधोग पूंजी पतियों का उधोग हो गया है। विश्व बाजार में चीन ने भारतीय कपड़ा उधोग को प्रतिस्पर्धा में कडी चुनौती दी है। भारत में कपड़ा उधोग श्रम प्रधान है जबकि चीन में यह तकनीकों से युक्त पूंजीप्रधान उधोग है। विदेशी खरीदारों को चीन कम कीमत पर ब्रांडेड उत्पाद देकर भारत को चुनौती देता है। भारत के कपडा उधोग को मुनाफे के लिए नई तकनीकी विकास के साथ उच्च अनुसंधान, नये डिजाइनों वैश्विक मूल्य श्रृंखला में अपने उत्पादनों को बाजार में विकय करना पडेगा।

क्लेयर शैफर 2009 – कपड़ा उधोग एवं परिधान उधोग को प्रोत्साहिक करने में पिछले दशकों की तुलना में वृद्धि हुई है। भारतीय परिधान निर्यात, उच्च उत्पादन के बावजूद सागर में बूंद के समान है। इन निर्यातों में अधिकतर मांग बैंगलोर, मुम्बई, नई दिल्ली और तिरूपुर की है। विश्व बाजार में विभिन्न कारणों से भारतीय परिधान क्षेत्र निर्यात में काफी हद तक केवल सूती वस्त्रों तक ही सीमित है। भारत भी अन्तराष्ट्रीय व घरेलू बाजार में अन्तराष्ट्रीय ब्राण्डेड वस्त्रों की विकी करता है, जोकि उच्च गुणवत्ता के होते है।

कोनालम नावी और अशोक कुमार (2012) – कपड़ा उधोग में लघु एवं मध्यम ईकाईयों की उधमिता एवं उत्पादन गुणवत्ता की जानकारी एवं अनुभव से ज्ञात हुआ है कि इसमें गुणवत्ता एवं नव कम्प्युटराइज्ड तकनीकीयों की कमी के कारण अधिक गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त नहीं हो पा रहा है। राज्य सराकरों को जिम्मेदारी पुर्ण नीतियां बनानी चाहिए व इन ईकाईयों की वित्तिय सहायता करनी चाहिए।

इन उधोगो में व्यापार, उत्पाद, नवाचार प्रकिया प्राप्त करने के लिए स्वतन्त्र अनुसंधान नई प्रोधौगिकीयों, प्रशिक्षित बुनकारों, कम्पनियो के विशेषज्ञों द्वारा संवाद, अनौपचारिक

विचार–विमर्श, सर्वेक्षण अवलोकनों को अपनाया जाना चाहिए। लम्बे समय तक न्यूनतम लागत द्वारा फर्म में अनुपात से अधिक उत्पादन करने से इन उधोगों को मजबूत कर नया संरचनात्मक ढांचा तैयार हो सकता है।

कपड़ा अनुसंधान एवं फाइबर जनरल IJET (2015) – 1976 से शुरू इस पत्रिका ने वस्त्र एवं कपड़ा उधोग के कई महत्पपूर्ण लेख प्रस्तुत किये है। कपड़ा उधोग में काम आने वाले यार्न, प्राकृतिक फाईबर, सिंथेटिक फाईबर, इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा प्रणाली, एक समान उत्पाद के उत्पादन विधि के द्वारा गुणवत्तायुक्त उत्पाद, बुनियादी एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान का मापन किया गया है।

प्राकृतिक यार्न एवं फाइबर बनाने मे काम आने वाले पॉलिमर रसायन, रसायन प्रक्रिया के परिष्करण, फाइबर प्रचलित परिधान, प्रोधौगिकी गुणवत्ता नियंत्रण, उत्पाद विश्लेषण माईको प्रोसेसर के प्रयोग एवं यांत्रिक प्रोधौगिकी का मूल्यांकन किया है।

इस तरह उच्च उत्पाद व अच्छे व्यापार के लिए प्रयोग होने वाली तकनीक का विश्लेषण किया है।

पूरे किये जाने वाल शोध अन्तराल (Main Findings of Research Gap)

साहित्य पूर्नावलोकन से यह स्पष्ट है कि कपड़ा उधोग के बारे में अभी तक किये गये विभिन्न अध्ययनों में कपड़ा उधोग के अलग – अलग पक्षों को सम्मिलित किया गया है।

इन अध्ययनों में अर्थशास्त्र के नियमों व सिद्धान्तों के अनुप्रयोगों से सम्बन्धित तथ्य अप्रर्याप्त प्रतीत होते है। प्रस्तावित अध्ययन में कपड़ा उधोग के समृद्धि, लागत व उत्पादन विश्लेषण के अन्तर्गत अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखते हुए कुछ नये अनुप्रयोग किये गये है।

इन मुद्दों को ज्ञान सम्वर्धन की दिशा मे महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

इस प्रकार प्रस्तावित अध्ययन में निम्न दिशायें व नई व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

(1) कपड़ा उधोग के समृद्धि विश्लेषण में आंकलित अर्थमितिक फलनों के प्रस्तावित चरों की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण है।

(2) कपड़ा उधोग पर आंकलित लागत फलनों के निर्धारण के अन्तर्गत विभिन्न फलनीय रूपों का समावेश किया गया है व नये चरों की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है।

(3) इसी प्रकार उत्पादन फलनों के निर्धारण व आंकलन के अन्तर्गत भी सुधरी हुई शोध प्रविधि को समाहित करने की कोशिश की गई है।

(4) उदारीकरण व आर्थिक सुधारों की प्रकिया के बाद की निर्धारित व्यापार नीतियों लघु एवं मध्यम उधोग इकाईयों की स्थिति, उत्पादकता, नई तकनीकों की भूमिका का इस अध्ययन में मापन करने का प्रयास किया गया है।

(5) उत्पादकता बढाने व कपड़ा उधोग का कुशलतापूर्वक व्यापार प्रबन्धन का भी मूल्यांकन किया गया है।

परिकल्पनाएं (Hypothesis)

कपड़ा उधोग के प्रस्तावित अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्न प्रकार है।

(1) राजस्थान में कपड़ा उधोग की समृद्धि में पर्याप्तता की कमी है।

(2) कपड़ा उधोग की रोजगार सृजन, निर्यात सम्वर्धन व उत्पादन प्रोत्साहन की दिशा में सीमित भूमिका है।

(3) कपड़ा उधोग में आगत उत्पादकता के निम्न स्तर विधमान है जिसमें वृद्धि की पर्याप्त सम्भावनाएं है।

(4) कपड़ा उधोग में वित्त प्रबन्ध व्यवस्था की पर्याप्त कमी है।

(5) कपड़ा उधोग की लघु एवं मध्यम इकाईयों की सभी स्थितियों में विस्तृत अनुसंधानों एवं सकारात्मक परिणामों के योगदान की सम्भावनाएं है।

शोध प्रविधि (Research Methodology)

इन अध्ययनो में समंकों के बारे में अनुसंधान व संकलित करके मूल्यांकन किया जाना प्रस्तावित है।

कपड़ा उधोग के प्रस्तावित अध्ययन में कालश्रेणी के समंक प्रस्तुत किये गये है। जो भारत में *आर्थिक* सुधारों से पहले और बाद में काल से सम्बन्धित है। इस दृष्टि से प्रस्तावित अध्ययन काल 1985 से 2015 तक रखा गया है।

कपड़ा उधोग में उत्पादन, लागत, संरचनात्मक ढांचा, आय, पूंजीनिर्माण, नई तकनीक, रोजगार, लाभप्रदता, निर्यात आदि चरों से सम्बन्धित काल श्रेणी समकों को निम्न स्त्रोतो से संकलित किया जाना इस अध्ययन में प्रस्तावित किया गया है।

1. विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन के लेख एवं वार्षिक प्रतिवेदन।
2. एशियन कपड़ा व्यापार संगठनों के सम्मेलन पत्र
3. कपड़ा मंत्रालय भारत सरकार के वार्षिक प्रतिवेदन
4. वाणिज्य अधिसूचना एवं सांख्यिकीय महानिदेशालय, भारत सरकार की रिर्पोट के विवरण
5. विदेशी व्यापार प्रसंस्करण एवं प्रसार डाटा
6. भारतीय सांख्यिकी संगठन के लेख एवं वार्षिक प्रतिवेदन 1985 से 2015 तक
7. भारतीय वस्त्र उधोग के प्रतिवेदन 2000 से 2015 तक
8. भारतीय सांख्यिकीय समुदायों के प्रतिवेदन 1985 से 2015 तक
9. भारतीय प्रतिदर्श एवं सर्वेक्षण संस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन
10. सांख्यिकीय कार्यक्रम कार्यान्वन मंत्रालय के लेख
11. राष्ट्रीय लघु उधोग निगम लिमिटेड के वार्षिक प्रतिवेदन
12. सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उधोग मंत्रालय की सांख्यिकी रिर्पोट
13. खादी और ग्रामोउधोग आयोग, भारत सरकार (KYIC) के प्रतिवेदन
14. उधोग उत्पादन सूचकांक तथा उपयोग आधारित सूचकांक के त्वरित अनुमान 12 अप्रेल 2016 तक के प्रतिवेदन

15. उधोग भवन, भारत सरकार के वार्षिक लेख पुस्तके
16. कपड़ा नीति 1985 की प्रगति एवं प्रभावशीलता के लेख
17. मानव निर्मित कपड़ा अनुसंधान संघ
18. निर्यात संवर्धन परिषद Appeat Export Promotion के लेख
19. अहमदाबाद, बोम्बे कपड़ा अनुसंधान संघ (BTRA), (AITRA) के प्रतिवेदन
20. दक्षिण भारतीय कपड़ा अनुसंधान संघ (SITRAD) के लेख
21. उत्तर भारतीय कपड़ा अनुसंधान संघ (NITRA) के लेख
22. कृत्रिम और कलात्मक कला सिल्क मिल्स अनुसंधान संघ के प्रतिवेदन (SASMIRA) के प्रतिवेदन
23. राष्ट्रीय कपड़ा नीति 2010 का विवरण साहित्य
24. राष्ट्रीय फैशन प्रोधौगिकीय संस्थान (NIFT) के आकडे
25. वस्त्र ऑनलाइन टीम रिर्पोट 2002
26. व्यापार सूचना प्रबन्ध के जनरलों के लेख
27. अखिल भारतीय कपड़ा सम्मेलनों के लेख
28. अन्तराष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध परिषद के प्रतिवेदन
29. भौतिक वितरण और लोजिस्टिक प्रबन्ध के अन्तर्राष्ट्रीय जनरल्स के लेख
30. उधोग भवन, राजस्थान के वार्षिक प्रतिवेदन
31. लघु उधोग, राजस्थान के वार्षिक लेख
32. रिको, राजस्थान के वार्षिक रिर्पोट
33. राजस्थान उधोग संघों के लेख
34. राजस्थान कपड़ा ऐसोसिएशनो के वार्षिक प्रतिवेदन
35. इकोनोमिक एवं पालिटिकल वीकली के स्त्रोत
36. योजना बुक के स्त्रोत आदि

प्रतिचयन (Sampling) :— प्रस्तावित अध्ययन में सरल, याद्धाच्छिक, प्रतिचयन विधि का उपयोग किया गया है जिसके अन्तर्गत, राजस्थान मे स्थित लघु एवं मध्यम आकार के

कपड़ा उधोग से सम्बन्धित इकाईयों का प्रतिदर्श लिया जायेगा। इन समंको का उपयोग करके विभिन्न अर्थमिति फलनों का आंकलन किया जायेगा।

अर्थमिति मॉडल (Econometric Model)

प्रस्तावित कपड़ा उधोग में उधोग की समृद्धि लागत और उत्पादन से सम्बन्धित विश्लेषणों में विभिन्न अर्थमिति फलनों का आंकलन किया जायेगा। समृद्धि फलन के आंकलन में समय की भूमिका के साथ–साथ समृद्धि के अन्य निर्धारकों जैसे बाजार दशा, सरकारी नीति आदि के योगदान का मूल्यांकन प्रस्तावित है।

लागत फलन के आंकलन में उत्पादन, साधनगहनता, समय आदि लागत निर्धारक चरों का विश्लेषण किया जायेगा।

उत्पादन फलन के अन्तर्गत कपड़ा उधोग के उत्पादन पर विभिन्न निर्धारक जैसे श्रम, पूंजी, तकनीकी स्तर, विज्ञापन सरकारी योजना, आदि कारकों के योगदान का अध्ययन प्रस्तावित है।

सांखिकीय विधियों द्वारा उपरोक्त फलनों का आंकलन किया जायेगा और विभिन्न जांच प्रतिदर्शजो की सहायता से विभिन्न परिकल्पना का परिक्षण किया जायेगा।

अध्याय का आयोजन (Organization of Study)

कपड़ा उधोग के प्रस्तावित अध्ययन के अन्तर्गत विस्तृत अध्याय योजना निम्न प्रकार से है।

अध्याय प्रथम – परिचय, अध्ययन का महत्व एवं उद्धेश्य

अध्याय द्वितीय –साहित्य का पुनर्वावलाकन : लागत कटौती व उच्च उत्पादकता के द्वारा उधोग की समृद्धि से सफलता की वास्तविकता

अध्याय तृतीय – शोध प्रविधि : समंक प्रतिचयन एवं अर्थमिति मॉडल

अध्याय चतुर्थ – समृद्धि विश्लेषण : आंकलन व परिणाम विश्लेषण

अध्याय पंचम – लागत विश्लेषण : संरचना व आंकलन

अध्याय छष्ठम –उत्पादन विश्लेषण : संरचना निर्धारक तत्व व अर्थमितिक फलन

अध्याय सप्तम –लागत कटौती व उच्च उत्पादकता के समारात्मक परिणाम

अध्याय अष्टम – निष्कर्ष एवं सुझाव

Textile Industry - Overview

Item	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12 (Prov)	2012-13 (Apr- Aug.) (Prov)
Textile Mills (Non - SSI)							
Spinning Mills (Non-SSI)	No.	1,597	1,653	1,673	1757	1761	1762
Composite Mills (Non-SSI)	No.	176	177	180	183	196	199
Total	No.	1,773	1,830	1,853	1940	1957	1961
Exclusive Weaving Mills (Non-SSI)	No.	179	184	183	174	173	173
Spinning Mills (SSI)	No.	1,219	1,247	1,260	1333	1336	1340
Powerloom Units	Lakh No.	4.69	4.94	5.05	5.18	5.20	3.12
Capacity Installed							
Spindles (SSI + Non SSI)	Million No	39.07	41.34	42.04	47.57	48.25	48.66
Rotors (SSI + Non SSI)	Lakh No.	6.21	6.59	6.74	7.49	7.71	7.82
Looms (Organised Sector)	Lakh No.	0.56	0.57	0.57	0.52	0.52	0.52
Powerloom	Lakh No.	21.06	22.05	22.46	22.92	22.98	23.16
Handloom	Lakh No.	38.91	38.91	23.77	23.77	23.77	23.77
Man-Made Fibres	Million Kg	1,659.22	1,763.11	1,763.11	1765.10	1766.00	1766.00
Man-made Filament	Million Kg	2,101.33	2,143.22	2,188.22	2192.75	2259.99	2259.99
Worsted Spindles (Woolen)	Thousand No	604	604	604	604	604	604
Non-Worsted Spindles (Woolen)	Thousand No.	437	437	437	437	437	437

Production of Fibres							
Raw Cotton-(cotton year Oct-Sept)	Lakh bales	307	290	305	339	353	334
Manmade Fibre	Million Kg	1,244	1,066	1,268	1,285	1,234	524
Raw Wool	Million Kg	44.00	42.90	43.20	43.30	43.30	-
Raw Silk	Million Kg	18.32	18.37	19.69	20.41	23.06	-
Production of Yarn							
Cotton Yarn	Million Kg	2,948	2,896	3,079	3,490	3,126	1,434
Other Spun Yarn	Million Kg	1,055	1,016	1,114	1,223	1,246	515
Manmade Filament Yarn	Million Kg	1,509	1,418	1,523	1,550	1,463	605
Fabric Production							
Cotton	Million Sq Mtr	27,196	26,898	28,914	31718	30593	14140
Blended	Million Sq Mtr	6,888	6,766	7,767	8278	8394	3766
100% Non-Cotton (Including Khadi, Wool &	Million Sq.Mtr.	21,941	21,302	23,652	22563	22377	8647.5
TOTAL	Million Sq.Mtr.	56,025	54,966	60,333	62,559	61,364	26,554
Per Capita availability of Cloth	Sq.Mtr.	41.85	39.01	43.12	43.96	--	--
Production of Textile Machinery	Rs. Crore	6,155	4,063	4,245	6,150	5280	--
Textile Exports & Imports							
Exports (Including Jute, Coir & Handicraft)	Million US $	22,165.84	21,057.06	22,426.29	27,766.11	33,161.74	10146.15 *
Imports	Million US $	3,326.46	3,560.87	3,436.26	4,179.41	5,191.44	1670.21 *

*Upto Jul' 2012
Updated on 10.10.2012

World Cotton Consumption

(Millions of 480-lb. bales)

Country	2008/09	% Share	2009/10	% Share	2010/11	% Share	2011/12	% Share	2012/13(July)	% Share	2012/13(August)	% Share	% Variation (Aug. 12-13 over July 12-13)
China	44.0	39.9	50.0	42.2	46.0	40.1	40.0	38.0	39.5	36.2	39.0	36.0	-1.3
India	17.8	16.2	19.8	16.7	21.1	18.4	20.5	19.4	21.5	19.7	21.5	19.9	0.0
Pakistan	11.1	10.1	10.4	8.8	10.0	8.7	10.1	9.6	11.3	10.4	11.0	10.2	-2.7
Turkey	5.1	4.6	5.8	4.9	5.6	4.9	5.3	5.0	5.6	5.1	5.6	5.2	0.0
Brazil	4.2	3.8	4.4	3.7	4.3	3.7	4.0	3.8	4.3	3.9	4.3	4.0	0.0
Bangladesh	3.8	3.4	3.9	3.3	3.7	3.2	3.2	3.0	3.6	3.3	3.6	3.3	0.0
United states	3.5	3.2	3.6	3.0	3.9	3.4	3.3	3.1	3.4	3.1	3.4	3.1	0.0
Indonesia	2.3	2.1	2.2	1.9	2.1	1.8	1.9	1.8	2.1	1.9	2.1	1.9	0.0
Mexico	1.9	1.7	1.9	1.6	1.7	1.5	1.7	1.6	1.8	1.7	1.8	1.7	0.0
Vietnam	1.3	1.2	1.6	1.3	1.7	1.5	1.6	1.5	1.8	1.7	1.8	1.7	0.0
Thailand	1.6	1.5	1.8	1.5	1.7	1.5	1.3	1.2	1.6	1.5	1.6	1.5	0.0
Uzbekistan	1.0	0.9	1.1	0.9	1.3	1.1	1.4	1.3	1.5	1.4	1.5	1.4	0.0
South Korea	1.0	0.9	1.0	0.8	1.0	0.9	1.1	1.0	1.2	1.1	1.2	1.1	0.0
Taiwan	0.8	0.7	1.0	0.8	0.9	0.8	0.8	0.8	0.8	0.7	0.9	0.8	12.5
Argentina	0.8	0.7	0.8	0.7	0.8	0.7	0.8	0.8	0.8	0.7	0.8	0.7	0.0
Others	10.1	9.2	9.4	7.9	9.1	7.9	8.4	8.0	8.5	7.8	8.4	7.8	-1.2
World Total	110.2		118.6		114.7		105.4		109.0		108.2		-0.7

Source : Monthly Economic Letter: U.S. & Global Market Fundamentals(Aug 2012)

Updated on 12.09.2012

India's Textile Industry Market Size

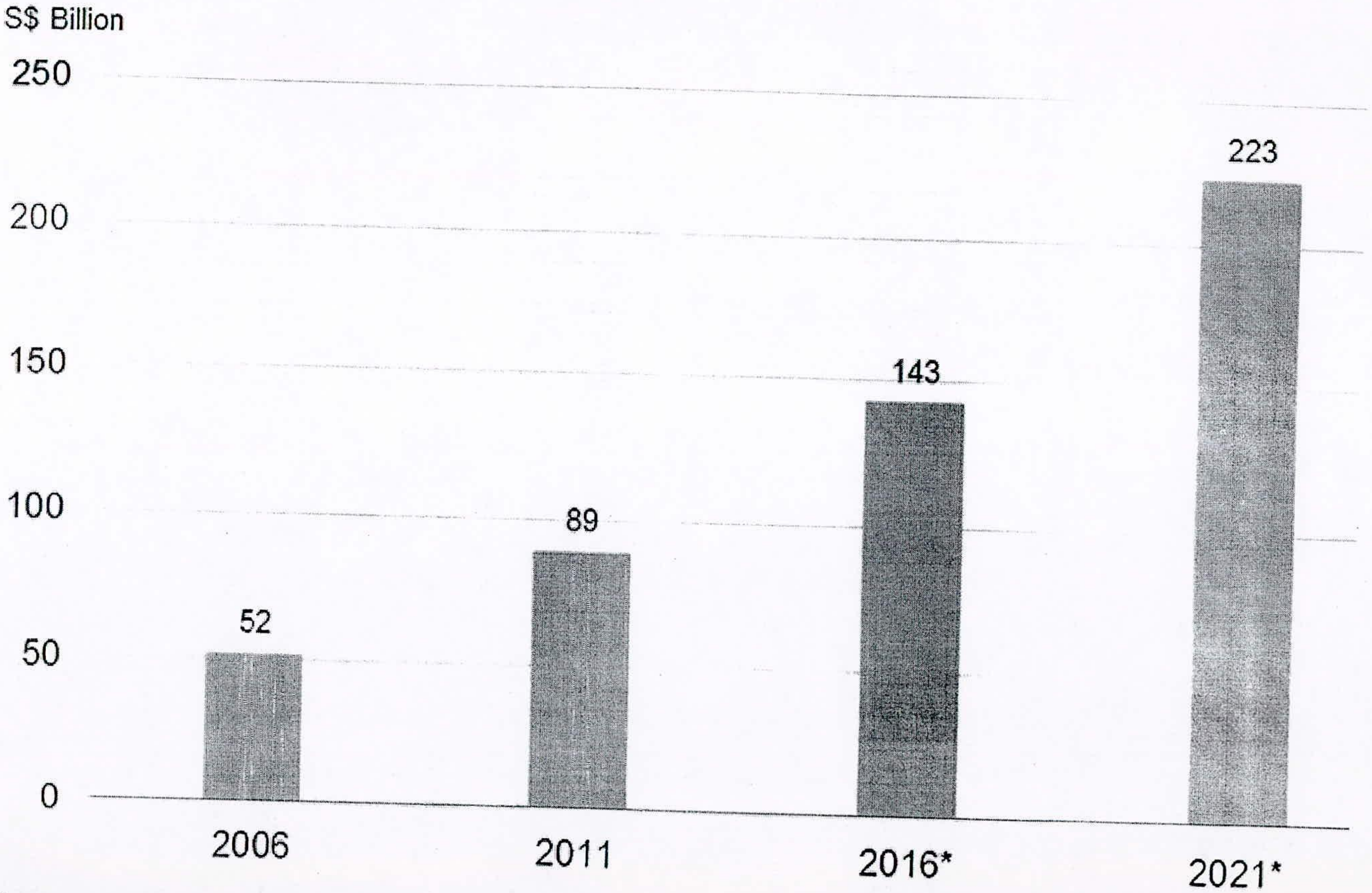

Source: Corporate Catalyst India

* Projected Figures

Output Growth of Advanced Economies vs Developing Economies

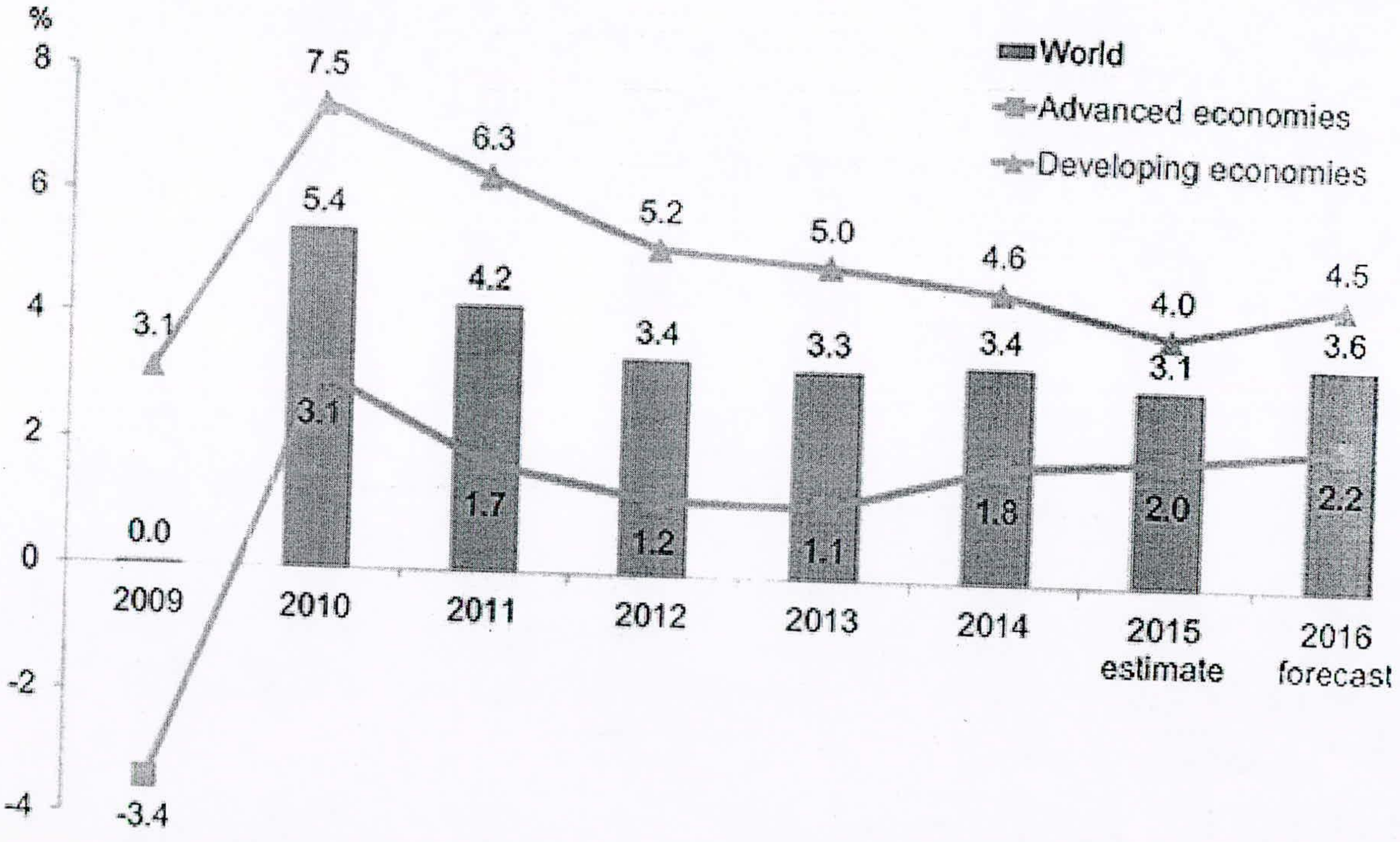

Source: International Monetary Fund, World Economic Outlook Database, October 2015

BIBILIOGRAPHY

- **Apparel Export Promotion Council (1998),** Hand Book of Export Statistics, 1985 to 2016, various issues, New Delhi.
- **Apparel View Report (2003).** Are We Using the right Technology For Apparel Production, Apparel view, February, pp:1.
- **Association of Synthetic Fibre Industry, (1996)** 1995-96 Handbook of Statistics on Man Made Synthetic Fibre/ Yarn Industry: Part One, Bombay.
- **ATIRA,BIRA,NITRA,SITRA- 1991**-Theory of Textile Industry, North indian textile Research Assosiation – Gajiabad.
- **Audet Denis, (1996),** "Globalisation in the Clothing Industry", Globalisation of Industry: Overview and Sector Reports, Organisation for Economic Co-Operation and Development, Paris.
- **Anil Gupta and Prateek Rastogi, 2011,** 'Prospects of Shuttle-less Looms in India', Journal of the Textile Association, 253.
- **Agarry S E and Ajani A O, 2011.** Evaluation of microbial systems for biotreatment of textile waste effluents in Nigeria: Biodecolorisation and Biodegradation of textile dye, J Appl. Sci. Environ. Manage 15(1). pp 79-86.

Arindam Basu 2008 'Textile Industries and Information Technology', Textile Review, Volume No.3, No.6, 19.

ADITYA MARWAHA (2008) . Impact of china on indian garment industry. A dissertation presented in a part consideration for degree of MA Marketing. The University of Nottingham.

Apparel Exported Promotion Council (2009). Statistics for garmemt and Knitwear. (New delhi : Aparel Export Promotion Council)

Apparel Fortnightly Report (2002). Review for exporting Performance. Apparel Fortnightly April , pp:63-64.

Apparel Online Report(2002). India needs to be cautious But not worried. Apparel Online, pp:14-17.

Apparel team Report Innovation (2002). Innovation for garment productivity Apparel online, November, pp:22-23.

Arif Anjum and D.V.Thakor (2011). 'Problems of the Power loom industry in Malegaon Dist.Nasik', International Journal of Trade, Economics and Finance, Volume No.2, No.3, 194.

Arunachalam, P. (ed.) (2010), Inclusive Growth in India, Serials Publications, New Delhi.

Ashok Kumar, S. (2010), Entrepreneurial Success in Small and Medium Enterprises, Mittal Publications, New Delhi.

Bedi, Jatinder S. (2002). Economic Reforms and Textile Industry – Performance and Prospects, Commonwealth Publishers, Delhi.

Camalun Nabi and Ashok Kumar (2012). Entrepreneurship Expectations and Experience, Himalaya Publishing House, Bombay, 2012, pp10-15.

Chatterjee, S. and R.Moan (1993). India's Garment Exporters' , In Economic and Political weekly, 28/35, pp:M95-119.

Christopher, S. Tang (2006). Perspectives in supply chain risk management. International Journal of Production Economics, October, Volume 103 Issue 2, pp:451-488.

Christopher , M. (1998). Logistics and supply chain management. 2nd edition , London: Financial Times Pitman Publishing.

Claire Shaeffer (2009). Sewing for the apparel industry. Prentice Hall New Delhi.

Calvin and Joseph (2007). Occupation Related Accidents in selected garment industry in Banglore City. Indian Journal of Community Medicine, vol. 31 No. 3, pp: 123-141.

C.Paramasivan (2010). 'Economics of small scale Textile Industries: A micro study.' Southern Economist, Volume No. 49, No.4, 28.

Cooker Join (1997). World textile and clothing consumption for costs of 2005, Textile Outlook International-(TOI)-(The Economist Intelligence Unit).

Chatarji M. And Mohan R.- (1993) – India's Garment Export, In economic and Political weekly-28/35, pp:M95-119.

Chnadra pankaj (1998). Strategy for global competitiveness of Indian Textile Industry.

Chandra, P (Ed) (1998): Technology, Practices and Competitiveness, The Primary Textile Industry in Canada, China and India, Himalayan Publishing House, Mumbai.

Directorate General of Commercial Intelligence & Statistics (DGCIS), Foreign Trade Statistics, Various Issues, Ministry of Commerce.

Das, S.K. (2001): The Warp and the Weft, An Enquiry into the Handloom Industry in West Bengal, K.P.Bagchi and Company, Kolkata.

Deshpande P.P (2009). Garment-Export Industry of india. APH Publishing Corporation, New Delhi.

Donald R. Coper (2006). Business research methods. Florida atlantic University, Tata Mc. Graw-Hill Publishing company limited, New Delhi,PP:331.

Dash, S (1995): Handloom Industry in India, Mittal Publications, New Delhi. Economic and Political Weekly, Dated 27, February, 1999.

Ethel C. Brooks (2007). Unraveling the garment Industry: Transitional Organizing and women'work. University of MinnesotaPress, Minnesota,USA.

Exim bank of india (1995). Indina Garment Exports: implication of theMFA. Phase Out Occasional, pp:34. (Delhi: Indian Book House).

- **Fabric hand characteristics by nozzle extraction technique (2016).** *Das, A ; Majumdar, A ; Gupta, P.* Vol 41, No 2 (2016) .
- **Government of India (1990).** "The Textile Industry in the 1990s: Restructuring with a Human Face", Report of the Committee to Review the Progress of Implementation of Textile Policy of June 1985, New Delhi.
- **Harland, C., Brenchley,R. and Walker,H (2003).** Risk in the supply network. Jouranl of Purchasing and Supply Management, Vol.9 No. 1,pp:51-62.
- **Indian Institute of Management Ahmedabad Aug. 1998** Ramaswamy K.V. and G. Gereffi(1998) Indias' Apparel Sector in the global economic- Catching Up or Falling Behind ?, Economic and politic weekly, 33-3,pp:122-130.
- **Indian Journal of Fibre & Textile Research (IJFTR) (2015).** Impact Factor of IJFTR is 0.420 (JCR 2015).
- **Jayanand V.Halti 2011**, 'Cotton growing farmers and their problems: A case study', Southern Economist, Volume No 50, No.16, 23.
- **K.R.M.Rao**, Development of Handloom Industry, Delhi, Discovery Publishing House , 1990.
- **Lead beater, S.R.B. (1993):** The Politics of Textiles-The Indian Cotton Mill Industry and the Legacy of Swadeshi, 1900-1985, Sage Publications, New Delhi.
- **Marlon Lezama, Brian webber and Charles Dagher. (2005).** Sourcing Practices In The Apparel Industry: Implication For Garment Exporter in Common Wealth Developing Countries. Common Wealth Secretariat, Marlborough House, Pall Mall, London, SW1Y 5HX,UK.

Mentzer,, J., Dewitt, W., Keebler, J., Min, S. ,Nix, N. ,Smith, C. and Zacharia, Z. (2001). Defining Supply Chain Management. Journal Of Business Logistics, Vol.22 No.2, pp:1-25.

Mishra, MSME Minister (2014). Seeks Small Entrepreneurs' "Participation in Make in India Campaign", The Hindu September 26, 2014.

Naik Gopal, Sudhir Kumar Jain, Santosh Kumar singh (1998). Economic Moddling of indian cotton industry.

Rama Mohana Rao, K (1990): Development of Handloom Industry, Discovery Publishing House, New Delhi.

Roy, T (1993): Artisans and Industrialization, Weaving in the Twentieth Century, Oxford University Press, Delhi.

Roy, T (1999): Traditional Industry in the Economy of Colonial India, Cambridge University Press, Cambridge.

Ramaswamy,K.V. and G. Gereffi (1998). India's Apparel Sector in the global Economy-cating up or falling behind ?.Economic and political weekly, 33-3, pp: 122-130.

- **Samar verma (2002).** Export competitiveness of indian textile and garment industry, working paper no. 94, indian council research on international economic relations, New delhi.
- **Satyaki Roy (2009).** Garment industry in indian –lesson from two clusters. Institute for Studies in industrial development , New Delhi.
- **Subbulakshmi V. (2004).** Indian Garment Industry- Prospects beyond 2005. ICFCAI University, Hyderabad.
- **Swallow D.A.(2008).** Production and Control in the indian garment export industry. Cambridge Press, pp:133-165.
- **S. Khanna, International Trade in Textiles :** MFA Quotas and a Developing Exporting Country, Delhi, Sage Publications, 1991.
- **Satya, L.D. (1997):** Cotton and Famine in Berar, 1850 - 1900, Manohar Publishers, New Delhi.
- **Thomas and Padmakumar (2013).** "The Setting of Entrepreneurship in India", Quarterly Journal of Economics, Vol.LXIX, No.4, November, 2013, pp15-25.
- **Uchikawa, S (1998):** Indian Textile Industry: State Policy, Liberalization-and Growth, Manohar Publishers and Distributors, New Delhi.
- **Vijaya Baskar, M(2002).** Garment Industry in south Asia- Ragsir Riches-competitiveness , productivity and job quality in the post –MFA Environment 2002.
- **Venkateswara Rao, A (1991):** A Directory of Hand weaving Industry of India, Shuttle Craft Publications, Hyderabad.
- **Xiaobo Zhao, Deju Xu, Hanqin Zhang and Qi-Ming He (2006).** Modeling and analysis of a supply- assembly-store chain, European Journal Of Operational Research , Vol.176,Is 1, 2006, pp:275-294.

APPENDIX - IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research work

(to be supplied in Six copies)

1. Nameof Scholar (In English) MANOJ KUMAR

   (In Hindi) मनोज कुमार

2. Title of the Research Work :

   (In English) Analysis of Cost and Production in Indian Textile Industry. (with special reference to Rajasthan)

   (In Hindi) भारत में कपड़ा उद्योग का लागत व उत्पाद विश्लेषण (राजस्थान के विशेष सन्दर्भ में)

3. Location

   a. Institution/Department where the work is to be done

   b. Geographical area of Investigation, if any.

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)
7. Major Hypothesis, if any.
8. Research Methodology.
9. List of References cited.

Signature of the Candidate with date

Outline Approved.

22-07-2016

Name and Signature of supervisor with date & seal.

(Dr. J.N. Sharma)

....

....

....